SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियां : छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में

राजेश अग्रवाल, (Ph.D.) वाणिज्य विभाग
गुरूकुल महिला महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
शोभा अग्रवाल, (Ph.D.) वाणिज्य विभाग
अग्रसेन महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
राजेश अग्रवाल, (Ph.D.) वाणिज्य विभाग
गुरूकुल महिला महाविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
शोभा अग्रवाल, (Ph.D.) वाणिज्य विभाग
अग्रसेन महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 03/04/2021
Revised on : -----
Accepted on : 10/04/2021
Plagiarism : 03% on 03/04/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 3%

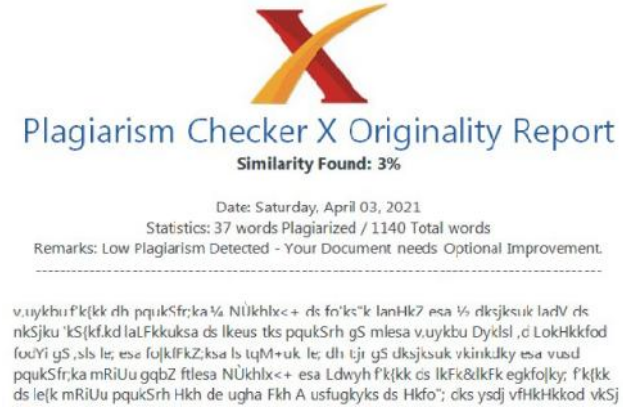

Date: Saturday, April 03, 2021
Statistics: 37 words Plagiarized / 1140 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

v.uykbu f'k{kk dh pqukSfr;ka ¼ NÙkhlx<+ ds fo'ks"k lanHkZ esa ½ dksjksuk ladV ds nkSjku 'kS{kf.kd laLFkkuksa ds lkeus tks pqukSrh gS mlesa v.uykbu Dykisl ,d LokHkkfod fodYi gS ,sls le; esa fo|kfFkZ;ksa ls tqM+uk le; dh t:jr gS dksjksuk vkinkdky esa vusd pqukSfr;ka mRiUu gqbZ ftlesa NÙkhlx<+ esa Ldwyh f'k{kk ds lkFk&lkFk egkfo|ky; f'k{kk ds le{k mRiUu pqukSrh Hkh de ugha Fkh A usfugkyks ds Hkfo"; dks ysdj vfHkHkkod vkSj

शोध सार

कोरोना संकट के दौरान शैक्षणिक संस्थानों के सामने जो चुनौती है उसमें ऑनलाइन कक्षाऐं एक स्वाभाविक विकल्प है। ऐसे समय में विद्यार्थियों से जुड़ना समय की जरूरत है। कोरोना आपदाकाल में अनेक चुनौतियां उत्पन्न हुई, जिसमें छत्तीसगढ़ में स्कूली शिक्षा के साथ–साथ महाविद्यालय शिक्षा के समक्ष उत्पन्न चुनौती भी कम नहीं थी। नौनिहालो के भविष्य को लेकर अभिभावक और शिक्षक दोनों ही बेहद चिंतित हो उठे, चिंता का होना स्वाभाविक भी था। ऐसे में आधुनिक टेक्नोलॉजी और शिक्षकों का जज्बा काम आया, खासकर दूरस्थ दुर्गम वनांचलो में। सरकार ने भी इस ओर ध्यान देते हुए पहले से मौजूद ऑनलाइन शिक्षा के प्लेटफॉर्म जैसे स्वयं, पेशेवर शिक्षण समुदाय, डिजिटल लाइब्रेरी आदि को उपयोग करने के लिए नोटिफिकेशन जारी कर दिए। ऑनलाइन शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए सरकार निरंतर विषय विशेषज्ञों और इससे प्रभावित लोगों के संपर्क में हैं। विश्वविद्यालयों स्कूलों महाविद्यालयों ने भी कोरोना के इस आपदा को एक अवसर मानते हुए ऑनलाइन शिक्षा को स्वीकार कर लिया।

मुख्य शब्द

कोरोना आपदा, ऑनलाइन शिक्षा, चुनौती.

छत्तीसगढ़ में 30,371 प्राथमिक शाला, 13,117 पूर्व माध्यमिक शाला, 1,940 हाई स्कूल 2,380 हायर सेकेंडरी स्कूल 15 विश्वविद्यालय तथा 400 से भी अधिक महाविद्यालय में पंजीकृत लगभग 30 लाख से भी अधिक बच्चे और 2 लाख से भी अधिक शिक्षक व प्राध्यापक जुड़े हुए हैं। प्रतिदिन ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से पढ़ाई के साथ–साथ छात्रों की जिज्ञासाओं और उसकी परेशानियों

को दूर कर रहे हैं। अब तक लगभग 40 लाख ऑनलाइन कक्षाएं संचालित हो चुकी है। शिक्षकों द्वारा छात्रों की पढ़ाई के लिए 22000 से भी अधिक वीडियो/ऑडियो पाठ अपलोड किए गए हैं। राज्य में लगभग 44 प्रतिशत क्षेत्र सघन वन है, इसके अलावा नदी पहाड़ आदि है, इसकी वजह से वनांचल क्षेत्र में जहां इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं थी वहां छात्रों को परेशानी होने लगी। इस समस्या का समाधान पारा–मोहल्ला में छोटी–छोटी कक्षाएं लगाकर किया गया। पारा–मोहल्ले में 23,643 शिक्षकों के माध्यम से 35982 केंद्रों में लगभग 7,50,000 विद्यार्थियों की पढ़ाई जारी रखने में मदद की जा रही है। वहीं विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में भी महाविद्यालयीन स्तर पर तथा रूसा के माध्यम से भी शत–प्रतिशत छात्रों को ऑनलाइन कक्षाएं उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। शिक्षा अपने मूल में समाजीकरण की प्रक्रिया है, जब–जब समाज का रूप में परिवर्तन हुआ शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन की बात हुई। आज इस कोरोना संकट के समय ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से शिक्षा के स्वरूप में बदलाव का प्रस्ताव नीति निर्धारकों के द्वारा सशक्त तरीके से रखा जा रहा है। ऑनलाइन शिक्षा केवल तकनीकी नहीं बल्कि समाजीकरण की नई प्रक्रिया है जिसके माध्यम से सरकार और नीति निर्धारकों की नीति व नीयत को समझा जा सकता है और उसे उसी रूप में देखने की भी जरूरत है। कोरोना संकट में शारीरिक दूरी बनाए रखकर शिक्षा के लिए तकनीकी का प्रयोग एक बात है, वैसे भी तकनीकी विकास के साथ ही शिक्षा में भी उसका उपयोग हो यह जरूरी भी है। ब्लैक बोर्ड से लेकर के स्मार्ट बोर्ड तक बदलती तकनीकी का प्रयोग क्लासरूम टीचिंग को मजबूत और रुचिकर बनाने के लिए किया जाता था। लाइब्रेरी का डिजिटल उसी प्रक्रिया का रूप है। व्याख्यान को रिकॉर्ड करना और उन्हें ऑनलाइन उपलब्ध कराना भी तकनीकी का प्रयोग ही है। इन तकनीकों का प्रयोग कर समाजिकरण प्रक्रिया को शिक्षा के द्वारा और बढ़ाया जा सकता है। आज भी ऑनलाइन शिक्षा को ज्यादातर शिक्षक प्राध्यापक सदस्य आमने–सामने की शिक्षा के मुकाबले कम मानते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि कैंपस की पढ़ाई ही बेहतर है लेकिन वर्तमान परिस्थिति में कुछ हद तक इसे ऑनलाइन रूप में स्थानांतरित किया जा सकता है।

ऑनलाईन शिक्षा की सीमाएं और चुनौतियां

आज ऑनलाइन शिक्षा अपने शैशवकालीन अवस्था में है, ऑनलाइन शिक्षा की सीमाएं और चुनौतियां भी कम नहीं है। ऑनलाइन शिक्षा की प्रमुख सीमाएं एवं चुनौतियां निम्नलिखित हैः

1. महामारी की इमरजेंसी के दौरान दूरस्थ शिक्षा यानी कि ऑनलाइन एजुकेशन को लेकर सारी परिचर्चाएं इस बुनियाद पर आधारित है कि सभी छात्रों के पास इंटरनेट सेवा है और सभी के पास ऑनलाइन पढ़ाई के लिए उपकरण यानी कि स्मार्टफोन, लैपटॉप, कंप्यूटर मौजूद है, जिसकी मदद से वे ऑनलाइन पढ़ाई कर सकते हैं, पर दुर्भाग्य की बात ये है कि ये बात स्कूल शिक्षा स्तर पर ही नहीं, उच्च शिक्षा के स्तर पर भी गलत है। स्कूलों में जहां स्थानीय समुदायों के ही छात्र आमतौर पर पढ़ाई करते हैं वहीं उच्च शिक्षा संस्थानों में पढ़ने वाले छात्र दूरदराज से भी आते हैं। ये अन्य राज्य के भी होते हैं जिसके पास इंटरनेट की सुविधा बड़ी दूर की बात है, क्योंकि छत्तीसगढ की एक बड़ी जनसंख्या के लिए अपनी अनिवार्य आवश्यकता को ही पूरा कर पाना एक बड़ी चुनौती है अतः ऐसे छात्रों के लिए ऑनलाइन कक्षाओं से जुड़ना एक बड़ी समस्या है।
2. कोविड–19 महामारी से पहले अधिकांश शिक्षण संस्थानों को ऑनलाइन शिक्षा का कोई विशेष अनुभव नहीं था, ऐसे में शैक्षणिक संस्थाओं के लिए अपनी व्यवस्था को ऑनलाइन शिक्षा के अनुरूप ढालना और छात्रों को अधिक से अधिक शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना भी एक बड़ी चुनौती होगी।
3. शिक्षकों के लिए भी तकनीकी एक बड़ी समस्या है। छत्तीसगढ़ के अधिकांश हिस्सा ग्रामीण है जहां कार्यरत शिक्षक व प्राध्यापक तकनीकी रूप से इतने प्रशिक्षित नहीं हैं तथा शहरी इलाकों में भी कार्यरत् शिक्षक भी जितना प्रशिक्षित होना चाहिए उतना नहीं है, साथ ही जहां 30 बच्चों की एक ऑनलाइन कक्षा आयोजित होनी चाहिए, वहां इसकी संख्या दोगुनी से भी अधिक है जिसके कारण भी समस्याएं उत्पन्न हो रही है।
4. इंटरनेट पर कई विशेष पाठ्यक्रमो या क्षेत्रीय भाषाओं से जुड़ी अध्ययन सामग्री की कमी होने से भी छात्रों को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।
5. कई ऐसे विषय है जिसमें छात्रों को व्यवहारिक शिक्षा (Practical learning) की आवश्यकता होती है, अतः

दूरस्थ या ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से ऐसे विषयों को सिखाना आसान काम नहीं है।

6. वर्तमान में स्कूलों व महाविद्यालयों में ऑनलाइन पढ़ाने के लिए पर्याप्त सुविधा शिक्षण संस्थाओं द्वारा उपलब्ध नहीं कराया गया है जिसके कारण से शिक्षकगण में भी पर्याप्त रुचि का अभाव देखा जा सकता है।

सुझाव

1. कोविड–19 और लॉकडाउन के प्रभाव ने शिक्षा क्षेत्र पर शिक्षण संस्थाओं को शिक्षण माध्यमों के नए विकल्पों पर विचार करने हेतु विवश कर दिया है।
2. छत्तीसगढ़ में ग्रामीण क्षेत्र ही नहीं अपितु शहरी क्षेत्र में भी स्मार्टफोन, लैपटॉप व कंप्यूटर छात्रों को उपलब्ध कराकर इंटरनेट की सुचारू व्यवस्था पर भी शिक्षण संस्थाओं, सरकार तथा नीति निर्धारक को ध्यान देना होगा।
3. छत्तीसगढ़ ही नहीं अपितु भारत में ई शिक्षा अपनी शैशवावस्था में है ,आवश्यकता इस बात की है कि इसको इसकी राह में मौजूदा विभिन्न चुनौतियों को संबोधित कर ई–शिक्षा के रूप में एक नए शिक्षण विकल्प को बढ़ावा दिया जाए।
4. यूट्यूब, रेडियो और टेलीविजन के माध्यम से दूरस्थ भागों में स्थित ग्रामीण क्षेत्रों में भी विषम परिस्थिति के दौरान शिक्षा की पहुंच सुनिश्चित की जानी चाहिए।

संदर्भ सूची

1. nios.ac.in
2. nopr.niscair.res.in
3. www.glbitm.org
4. www.researchgate.net
5. www.academia.edu

****